

## २. स्थानसमुत्कीर्तनचूलिकानुसार स्थानक्रमसे प्रकृतियोंका बन्ध

१. २. ३. ४. ५. ६. ७. ८. ९. १०. ११. १२. १३. १४. १५. १६. १७. १८. १९. २०. २१. २२. २३. २४. २५. २६. २७. २८. २९. ३०.

### १. मिथ्यादृष्टि जीव द्वारा बन्धयोग्य प्रकृतियां

५ ज्ञानावरणीय; ९ दर्शनावरणीय; २ वेदनीय; मिथ्यात्व, १६ कषाय, अन्यतम वेद, हास्य और रति, अथवा अरति और शोक; भय और जुगुप्सा, ये २२ मोहनीय; ४ आयु; नरकगति आदि २८ नामकर्म ( सूत्र ६१ ) अथवा तिर्यचगति आदि ३०, २९, २६, २५, या २३ नामकर्म ( सूत्र ६६-८३ ) अथवा मनुष्यगति आदि २९ या २५ नामकर्म ( सूत्र ९१-९४ ) अथवा देवगति आदि २८ नामकर्म ( सूत्र १०६ ); नीच या उच्च गोत्र; और ५ अन्तराय ।

### २. सासादन जीव द्वारा बन्धयोग्य प्रकृतियां

५ ज्ञानावरणीय; ९ दर्शनावरणीय; २ वेदनीय; १६ कषाय, स्त्री व पुरुष वेदमेंसे अन्यतर वेद, हास्य और रति, अथवा अरति और शोक, भय और जुगुप्सा, ये २१ मोहनीय; नारकायुको छोड़ शेष ३ आयु; मनुष्यगति आदि २९ नामकर्म ( सूत्र ८९ ) अथवा देवगति आदि २८ नामकर्म ( सूत्र १०६ ); नीच या उच्च गोत्र; और ५ अन्तराय ।

### ३. सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवद्वारा बन्धयोग्य प्रकृतियां

५ ज्ञानावरणीय; निद्रानिद्रादि ३ को छोड़ शेष ६ दर्शनावरणीय; २ वेदनीय, अप्रत्याख्यानादि १२ कषाय, पुरुषवेद, हास्य और रति, अथवा अरति और शोक, भय और जुगुप्सा ये १७ मोहनीय; यहां आयुबन्ध होता नहीं; मनुष्यगति आदि २९ नामकर्म ( सूत्र ८७ ); उच्च गोत्र; और ५ अन्तराय ।

### ४. असंयतसम्यग्दृष्टि जीव द्वारा बन्धयोग्य प्रकृतियां

५ ज्ञानावरणीय; निद्रानिद्रादिको छोड़ शेष ६ दर्शनावरणीय, २ वेदनीय; मिश्रके अनुसार १७ मोहनीय; मनुष्य और देव आयु; मनुष्यगति आदि ३० नामकर्म [ सूत्र ८५-८६ ] अथवा २९ नामकर्म ( सूत्र ८७ ) अथवा देवगति आदि २९ नामकर्म ( सूत्र १०२ ); उच्च गोत्र और ५ अन्तराय ।

## ५. संयतासंयत जीव द्वारा बन्धयोग्य प्रकृतियां

५ ज्ञानावरणीय; निद्रानिद्रादि ३ को छोड़ शेष ६ दर्शनावरणीय; २ वेदनीय; प्रत्याख्यानावरणादि ८ कषाय एवं मिश्रके अनुसार शेष ५, ये १३ मोहनीय; देवायु; देवगति आदि २९ नामकर्म ( सूत्र १०२ ); उच्च गोत्र; और ५ अन्तराय ।

## ६. संयत जीव द्वारा बन्धयोग्य प्रकृतियां

५ ज्ञानावरणीय सूक्ष्मसाम्पराय तक । निद्रानिद्रादि ३ को छोड़ शेष ६ दर्शनावरणीय अपूर्वकरणके प्रथम सप्तम भाग तक, तथा निद्रानिद्रादि ५ को छोड़ शेष ४ अपूर्वकरके द्वितीय भागसे लेकर सूक्ष्मसाम्पराय तक । असातावेदनीय प्रमत्तसंयत तक, तथा सातावेदनीय सयोगी तक । ४ संज्वलन कषाय एवं मिश्रके अनुसार पुरुषवेदादि ५ ये ९ मोहनीय प्रमत्तसे लेकर अपूर्वकरण तक, एवं ४ संज्वलन और पुरुषवेद ये पांच मोहनीय अनिवृत्तिकरण तक; तथा इसी गुणस्थानमे क्रमशः पुरुषवेदरहित ४ संज्वलन, क्रोध संज्वलनको छोड़ केवल ३ संज्वलन, एवं क्रोधमानको छोड़ केवल २ संज्वलन, सूक्ष्मसाम्परायमें केवल एक लोभसंज्वलन मोहनीय । देवायु अप्रमत्त गुणस्थान तक । देवगति आदि ३१, ३०, २९, या २८ नामकर्म अप्रमत्त व अपूर्वकरण संयतके ( सूत्र ९६-१०४ ), यशःकीर्ति नामकर्म अपूर्वकरणके ७ वें भागसे सूक्ष्मसाम्पराय संयत तक । उच्च गोत्र सूक्ष्मसाम्पराय तक । ५ अन्तराय सूक्ष्मसाम्पराय तक ।

